संस्थापित १८६७ ई०

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

● वर्ष : १२३ ● अंक - ३६ ● २५ सितम्बर २०१८ भाद्रपद शुक्ल पक्ष पूर्णिमा संवत् २०७५ ● दयानन्दाब्द १६४ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११६

ठाकुर विक्रम सिंह जी का अमृत महोत्सव

– डा0 धीरज सिंह, सभा प्रधान

१६ सितम्बर २०१८ को दिल्ली मोक्षमूलर रोड़ में अमृत महोत्सव मनाया गया जिसकी उपाध्यक्षता स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने की। संयोजन डा० धर्मेन्द्र कुमार शास्त्री ने किया तथा मुख्य अतिथि श्री सुब्रह्मण्यम स्वामी जी रहे विशिष्ट अतिथि एवं भाजपा के उपाध्यक्ष पं० सत्यानन्द वेद वागीश, वेद प्रताप जी वैदिक, डा० लोकेश जी, स्वामी धर्मानन्द जी उड़ीसा, स्वामी धर्मेश्वरानन्द सभा मंत्री, सारस्वत मोहन मनीषी तथा स्वामी आर्यवेश जी प्रधान सार्वदेशिक सभा रहे।

आर्य सन्यासियों में स्वामी देवव्रत जी स्वामी सम्पूर्णानन्द जी की अध्यक्षता में सभी सन्यासी शोभायमान थे आर्य विद्वानों में श्री वेद प्रकाश जी श्रोत्रिय, डा० प्रशस्य मित्र, डा० ज्वलन्त कुमार जी, आचार्य सत्यनन्द वेद वागीश जी, डा० वेद पाल जी, डा० ज्वलन्त कुमार जी, आचार्य वागीश जी, डा. वेदपाल जी, डा. रघुवीर वेदालंकार आदि–आदि सुशोभित थे आचार्यों में धनन्जय जी आदि शोभायमान थे आचार्य, सुकामा जी. सूर्यादेवी जी. चतुर्वेदा पवित्रा विद्यालंकार हैदराबाद से शशि प्रभा जी आदि–आदि सुशोभित थी आर्य भजनोपदेशक में सहदेव बेधक श्री कैलाश कर्मठ आदि–आदि शोभायमान थे आर्यकर्ताओं में डा० आनन्द जी की टीम शोभायमान थी व्यवस्था में श्री अरूण वीर जी पूर्ण सहयोग कर रहे थे सम्मान पत्र एवं शाल तथा राशि से सभी प्रफुल्लित मन थे विद्वानों के विचारों से और देश से आये विद्वानों से सीधा परिचय करने का सौभाग्य मिला यह विद्वान सम्मेलन था दर्शन मेला था और सुखादु भोजन प्राप्त करने का एक अलम्य अवसर भी था।

ठाकुर विक्रम सिंह जी के अमृतमहोत्सव पर सभी ने दीर्घायु होने की शुभकामनाओं की। आर्य मित्र परिवार की ओर से एवं सभा प्रधान डॉ० धीरज सिंह जी की ओर से भी बहुत–बहुत शुभकामनाएं।

इसके बाद सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए पवन पहलवान को सांतवना प्रदान करते हुए उनके श्रेष्ठ कार्यों को अपनाने पर बल दिया। उन्होंने पिता को आकाश से भी ऊँचा सम्मान देकर यक्ष–युधिष्ठिर संवाद की चर्चा की और बताया पिता अपने पुत्र की उन्नति से सदैव प्रसन्न रहता हैं पिता का सम्मान और उत्तरदायित्व सामाजिक रूप से प्रदान करते हुए गणेश शब्द की व्याख्या की ओर बताया कि घर के मुखिया में निम्न विशेषतायें होनी आवश्यक हैं–

१. सबका समर्थन सभी के द्वारा सम्मान।

२. सबके प्रति उदारता–हित की भावना।

३. पक्षपात रहित व्यवहार।

४. सबके सुनने की क्षमता–सुनकर सुरक्षित रखना।

५. सबकी खाद्य संमस्या पूर्ति।

६. सबके लिए अनुशासन और नियन्त्रण।

७. सबको शिक्षा और समय–समय पर ज्ञान वर्धन।

८. उत्तरदायित्व लेकर भी प्रसन्न मन रहना अहंकार शून्य जीवन से सभी के प्रिय बनने का प्रयास करें।

यह आप सभी के लिए अनिवार्य शिक्षा है आप सभी अपने–अपने परिवारों में इस शिक्षा से सुख–समृद्धि बढ़ाते हुए ऐश्वर्यशाली बन सकते हैं प्रभु की कृपा पाने के भी अधिकारी बन सकते हैं। कार्यक्रम में पधारे सभी अतिथियों का पवन कुमार आर्य ने आभार व्यक्त किया शान्ति पाठ के साथ सभा सम्पन्न हुई।

डॉ. धीरज सिंह
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

सम्पादकीय.....

आर्य समाज का वर्चस्व बढ़ाने का एक नूतन प्रशंसनीय प्रयास

आर्य जगत् के यशस्वी नेता, विद्वान, उपदेशक के रूप में प्रसिद्धि को प्राप्त ठा० विक्रम सिंह जी के अमृत महोत्सव के पावन पर्व पर अखिल भारत वर्षीय सन्यासी विद्वान्, आचार्य, आचार्या, उपदेशक, उपदेशिका आर्य पुरोहित एवं आर्य कार्यकर्ताओं का एक सम्मेलन भव्यता एवं सौम्यता के वातावरण में सम्पन्न हुआ, ७५ वें जन्मोत्सव पर ७५ लाख रूपये सुपुत्रों ने सहर्ष पितृ चरणों में समर्पित करते हुए कहा कि आप इनका सदुपयोग करें पिताश्री ने लक्ष्मी से सारस्वत यज्ञ सम्पन्न किया और "आर्य समाज के गौरव" नाम से आर्य विद्वानों को सम्मान पत्र, शाल एवं फल, मिष्ठान, मेवे तथा धनराशि से सम्मानि किया आपकी उदारता पर सभी विद्वान प्रसन्नता उत्साह एवं अपना सौभाग्य अनुभव कर रहे थे वे ऐतिहासिक क्षण जीवन की मधुर स्मृतियों के साथ जुड़ गये।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का गुणगान करते हुए सभी विद्वान् एकमत थे कि उनकी कृपा का यह सुखद प्रसाद है महर्षि के उपकारों का स्मरण करके भाव विभोर हो रहे थे कि यदि महर्षि के दर्शन ठाकुर विक्रम सिंह जी के दादा श्री को न होते तो आज यह दृश्य देखने का सौभाग्य हम प्राप्त न कर पाते श्री पं० सत्यानन्द जी वेद वगीश के उद्बोधन का यही सार था। ठाकुर विक्रम सिंह जी के तीनो सुपुत्र श्री इन्द्रवीर जी डॉ० वरूण वीर जी तथा राहुल कुमार जी के हृदय की विशालता और पवित्रता का भी परिचय मिलता है। जन्म दिवस मनाने के आजकल अनेक रूप हैं लाखों रूपयों का दुरूपयोग लोग होटलों में करते हैं अन्य प्रकार के प्रयोग और उदाहरण हैं जो समाज में विकृति पैदा करते हैं गुब्बारे पटाखें आदि–आदि दृश्य देखे जाते हैं।

लेकिन आर्य समाज के कार्य को नई ऊर्जा देने का सन्देश लेकर आर्य विद्वानों का इतनी बड़ी संख्या में और इतनी बड़ी राशि के साथ इतनी भव्यता और निरमिमानिता–सौम्यता के साथ पूरे आर्य जगत् के विद्वानों के दर्शन, सम्मेलन एक साथ प्राप्त हो सके यह आर्य समाज के इतिहास का स्वर्णिम अध्याय का प्रथम पृष्ठ है। तुलनात्मक दृष्टि से यहाँ कहने का अवसर नहीं है हो सकता है आर्थिकता में सुसम्पन्न आर्य श्रेष्ठियों के आकर्षण भव्य कार्यक्रम प्रभावित करने वाले रहे हो लेकिन वे ऊर्जा देने वाले नहीं थे। जहाँ एक संकल्प शक्ति आर्य विचार धारा, आर्य समाज के विचारों को जनमानस तक प्रेषित करने के लिए मात्र विद्वानों की सभा हो और वे कृतज्ञता अनुभव कर अपने जीवन के सदुपयोग में आर्य समाज, वेद प्रचार आर्यों का गणराज्य, महर्षि का दिव्य सन्देश जन–जन तक पहुंचाने के लिए प्रेरित कर रहा हो ऐसा सादृश्य कभी नहीं देखने का सौभाग्य नहीं मिला था ऐसा प्रायः सभी विद्वान अनुभव कर रहे थे। उनका मानना था कि गुरूकुलीय परम्परा से आर्य समाज के उपदेशक पुरोहित आचार्य रूप में रहने वाला व्यक्तित्व अपनी भावी पीढ़ी को इतना उदार बना सकता है और उस पैसे से विद्वानों का आदरभाव करे कृतज्ञता ज्ञापित करके प्रभु को धन्यवाद दे कि आपने जो दिया प्रभु आर्य समाज का कोई विद्वान उपदेशक आर्थिक रूप से कमजोरी अनुभव न करे वह भी समाज में प्रतिष्ठित होकर जी सकता है यह एक सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत किया है। जो आपकी योग्यता के अनुरूप ही था जिस विद्वान् को भी बोलने का अवसर मिला उसमें आर्य सामज के प्रचार का ही भाव दिखाई दिया देश की दशा सुधारने का संकल्प दिखाई दिया, डा० प्रशस्य मित्र शास्त्री रायबरेली वालों ने सुनाया कि लक्ष्मी से मैंने पूछा तुम विद्वानों के पास क्यों नहीं रहती? तो बरेली में सरस्वती के उपासक हैं। तो फिर क्षत्रियों के पास क्यों नहीं रहती? तो बरेली में समर में लड़ेगे, मरेंगे, विधवा हो जाऊँ सारे उदार लोगों के पास क्यों नहीं रहती? तो बरेली में पता नहीं मुझे किसके पास भेज दे मेरा अपमान होगा अतः मैं कंजूस के पास ही रहती हूँ वह मुझे छोड़ नहीं सकता सदैव मेरी सेवा और रक्षा करता रहता है।

लेकिन ठाकुर विक्रम सिंह विद्वान भी हैं क्षत्रिय भी हैं ओर उदार भी हैं फिर भी लक्ष्मपति हैं यह एक अनुपम उदाहरण हैं जो दानियों में भी क्षेष्ठ हैं। फिर उन्होंने आशीर्वाद रूप में ३ श्लोक प्रस्तुत किये जो इस प्रकार है–

विद्वत्पूजनमस्ति यस्य सततं कृत्यं सुसम्मानदम्
आर्याणां सुविचार–सार–सरिणं संगम्य सौभाग्यदम्।
धर्मेयस्य स्वतः प्रवृत्तिरधिका रराजते निःस्पृहा श्रीमान्
विक्रम सिंह एषः नितराम् ऐश्वर्य युक्तो महान्।।१।।
वेदानां भुवने प्रचारकरणे ये व्यापृताः साम्प्रतम्।
संगीते भजनोपदेशकरणे सेवारताः सज्जनाः।।
विद्वांसः कवयस्तथा गुरूकुलेष्वाचार्य पीठे रताः।
आशीर्वाद महो! ददत्यवसरे सर्वे परिव्राजकाः।।२।।
श्रीमद् दयानन्द पदानुयायी,
सर्वात्मना वेदविचार वाही।
श्री विक्रम सिंह समान मूर्तिः
जीव्यात् चिरं सत्कमनीय कीर्तिः।।३।।

आर्य जगत् के सभी सन्यासी, विद्वान्, उपदेशक आर्य भजनोपदेशक आर्य पुरोहित आर्य कार्यकर्ताओं का पिछले कई वर्षों से सम्मान जन्मोत्सव पर करते आ रहे हैं आर्य पत्रकारों का भी गतवर्ष किया था यह परम्परा आर्य समाज के श्रेष्ठ वर्ग को में तथा उदार हृदयों में आनी चाहिये यह सारस्वत यज्ञ है मैं आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० की ओर से आर्य मित्र परिवार की ओर से तथा सभी सम्मानित विद्वानों की ओर से आपके सुखद भविष्य और अच्छे स्वास्थ्य के साथ ही दीर्घायु की कामना करता हुआ आपके परिवार में सभी आबाल वृद्ध को विशेष रूप में तीनों सुपुत्रों को बहुत बहुत शुभकामनायें और आशीर्वाद प्रदान करता हूँ।

हवन का महत्व

फ्रांस के ट्रेले नामक वैज्ञानिक ने हवन पर रिसर्च की। जिसमें उन्हें पता चला कि हवन *मुख्यतः आम की लकड़ी पर किया जाता है।* जब आम की लकड़ी पर किया जाता है। जब आम की लकड़ी जलती है तो फॉर्मिक एल्डिहाइड नामक गैस उत्पन्न होती है। जो कि खतरनाक बैक्टीरिया और जीवाणुओं को मारती है। तथा वातावरण को शुद्ध करती है। इस रिसर्च के बाद ही वैज्ञानिकों को इस गैस और इसे बनाने का तरीका पता चला। गुड़ को जलाने पर भी ये गैस उत्पन्न होती है। टौटीक नामक वैज्ञानिक ने हवन पर की गयी अपनी रिसर्च में ये पाया की यदि आधे घंटे हवन में बैठा जाये अथवा हवन के धुएं से शरीर का सम्पर्क हो तो टाइफाइड जैसे खतरनाक रोग फैलने वाले जीवाणु भी मर जाते हैं और शरीर शुद्ध हो जाता है।

हवन की महत्ता देखते हुए राष्ट्रीय वनस्पति अनुसन्धान संस्थान लखनऊ के वैज्ञानिकों ने भी इस पर एक रिसर्च की। क्या वाकई हवन से वातावरण शुद्ध होता है और जीवाणु नाश होता है? अथवा नहीं? उन्होंने ग्रंथों में वर्णित हवन सामग्री जुटाई और जलाने पर पाया कि ये विषाणु नाश करती है। फिर उन्होंने विभिन्न प्रकार के धुएं पर भी काम किया और देखा कि सिर्फ आम की लकड़ी १ किलो जलाने से हवा में मौजूद विषाणु बहुत कम नहीं हुए। पर जैसे ही उसके ऊपर आधा किलो हवन सामग्री डाल कर जलायी गयी तो एक घंटे के भीतर ही कक्ष में मौजूद बैक्टीरिया का स्तर ६४ प्रतिशत कम हो गया।

यही नहीं उन्होंने आगे भी कक्ष की हवा में मौजूद जीवाणुओं का परीक्षण किया और पाया कि कक्ष के दरवाज़े खोले जाने और सारा धुआं निकल जाने के २४ घंटे बाद भी जीवाणुओं का स्तर सामान्य से ६६ प्रतिशत कम था। बार–बार परीक्षण करने पर ज्ञात हुआ कि इस एक बार के धुएं का असर एक माह तक रहा तक रहा और उस कक्ष की वायु में विषाणु स्तर ३० दिन बाद भी सामान्य से बहुत कम था।

यह रिपोर्ट एथ्नोफार्माकोलोजी के शोध पत्र **(Resarch journal of Ethnopharmacology 2007)** में भी दिसम्बर २००७ में छप चुकी है। रिपोर्ट में लिखा गया कि हवन के द्वारा न सिर्फ मनुष्य बल्कि वनस्पतियों एवं फसलों को नुकसान पहुचाने वाले बैक्टीरिया का भी नाश होता है। जिससे फसलों में रासायनिक खाद का प्रयोग कम हो सकता है।

प्रस्तुति– आदित्य प्रताप सिंह, तिलहर

आर्य समाज को समर्पित एक राज परिवार उसके मुखिया...

धरोहर..... राजा रणंजय सिंह जी आर्य

- स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती

मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ०प्र० लखनऊ
गुरूकुल पूठ, गढ़ मुक्तेश्वर-हापुड़
मो० ९८३७४०२१९२

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० ने अपनी शताब्दी मनाई थी डी.ए.वी. कालेज लखनऊ के प्रांगण में एक मेला लगा था वर्ष १९८६–८७ में उन दिनों पं० इन्द्रराज जी प्रधान और श्री मनमोहन जी तिवारी मन्त्री पद पर प्रतिष्ठत थे अजमेर के बाद मेरे जीवन का बहुत विशाल कार्यक्रम था। आर्यवीर दल उ०प्र० का मुख्य संचालक होने के नाते प्रदेश के सभी आर्य वीरों को बड़ी तैयारी से लाया था हजारों की संख्या में आर्यवीर व्यवस्था एवं सुरक्षा में लगे थे शोभायात्रा भी दर्शनीय थी सारे कार्यक्रम भव्य प्रभावशाली थे।

इस अवसर पर हमारे लिए महत्वपूर्ण पल थे "राजा रणञ्जय सिंह जी" से परिचय–वार्तालाप, फोटोग्राफ, उनसे मिलकर जो उस समय हर्षानुभूति हुई थी उसे लेखनी लिखने में असमर्थ है वाणी बोलने में अक्षम है विचारों का ताना–बाना इधर– उधर घूमता रहता है और मंच क एक कोने पर आकर रुक जाता है जहां राजा जी कुर्सी पर बैठे हुए हैं। आपने भी बहुतों ने यह दृश्य देखा होगा लेकिन मेरे लिए एक नया संसार था मेरी कल्पनाओं का अथाह समुद्र था मुझे बार–बार महर्षि दयानन्द जी का वह दृश्य दिखाई दे रहा था कि काशी शास्त्रार्थ मध्यस्थ के रूप में हैं अमेठी के राज ईश्वरी सिंह जी और दोनों तरफ शास्त्रार्थ सफर के योद्धा है एक तरफ वाराणसी के २७ विद्वान पण्डित हैं और एक तरफ प्रमुख योगीराज महर्षि दयानन्द जी हैं और वे विजयी होकर भी राजा की दृष्टि में विजयी नहीं लग रहे हैं, क्योंकि वे पक्षपाती पञ्च की भूमिका निभा रहे हैं। बाद में पश्चाताप भी करते हैं और क्षमायाचना करके महर्षि का सम्मान भी अपने राजदरबार में बुलाकर करते हैं। अमेठी के राजा की भूमि आज भी वाराणसी में आनन्द बाग के नाम से है जहां काशी शास्त्रार्थ स्थल, दुर्गा कुण्ड पर बना हुआ है। मेरी दृष्टि वह सारे दृश्य को देख रही थी कि ये राजा उन्हीं के पौत्र हैं जो आज महर्षि के प्रति समर्पित भाव से प्रत्येक आर्य सन्यासी विद्वान–उपदेशक का सम्मान कर रहे हैं आज कोई पक्षपात अथवा सन्देह नहीं है। आज पूर्ण प्रसन्न वंदन है। सिर पर टोपी लगाये आंखों पर उपनेत्र सजाये भारी भीमकाय शरीर ओजस्वी तेजस्वी यशस्वी आंखों में तेज लिए मुख मण्डल की शोभा हास्य पुट से कोई गुना बढ़ रही है। सामान्य से वस्त्रों में भी विशेष आभा छिपी है। प्रत्येक व्यक्ति मिलने में संकोच करता है, लेकिन वह उसकी भ्रान्ति है जो मिलकर ही दूर हो पाती है मुझे वे क्षण आज भी नवीन से लग रहे हैं।

उन्होंने ब्रह्मचारियों का स्वागत किया और अपनी एक कविता सुनाई कुछ संस्मरण सुने और उन्होंने अमेठी आने का निमन्त्रण दिया हमारे भ्राता डॉ० ज्वलन्त कुमार जी शास्त्री अमेठी में ही पढ़ाते हैं वे कहा करते थे कि कभी अमेठी आओ उस समय अमेठी इतनी प्रसिद्ध नहीं थी जितनी आज है मन में आया कि राजा साहब का भी महल देखेंगे और भ्राता जी से भी मिलेगें हमारे एक भ्राता जी वेद प्रकाश जी शास्त्री भी एक इण्टर कालेज में प्रवक्ता थे वे भी अमेठी रहते थे एक भ्राता सत्यकाम जी भी अमेठी रहते थे अतः सभी से मिलना हो जायेगा, ऐसा सोचकर वाराणसी से वापसी में काशी विश्वनाथ द्वारा अमेठी उतर गया और तीनों मित्रों से मिला रात्रि निवास किया तब प्रातःकाल महल देखने का क्रम बनाया और राजा रणञ्जय सिंह जी के दर्शन किये वार्ता हुई तथा पुरानी बातें नवीन हो गई आर्यसमाज के विषय में काफी देर तक वार्ता होती रही। आपकी इच्छा थी कि मेरे बाद मेरा बेटा संजय सिंह जी आर्य समाज का सदस्य बने और सक्रिय होकर नेतृत्व करे पर पता नहीं कौन सी राजनीति थी जो उनके चाहते हुए भी उन्हें राजकुमार बनाकर तो रक्खा पर आर्य कुमार नहीं बना पाये। आर्य समाज के प्रचार में वे दूर–दूर तक जाते रहे आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के वे प्रधान पद पर सुशोभित रहे आर्थिक रूप से भी सभा को लाभ हुआ आप सांसद भी बने उ०प्र० सरकार में भी रहे लेकिन आर्य समाज को नहीं छोड़ा आपका यह दृढ़ निश्चय था कि हमारे पूर्वजों ने जो मार्ग अपनाया है हम उसी का अनुकरण करेगें। वे कहा करते थे कि महर्षि दयानन्द सरस्वती का हमारे ऊपर कितना उपकार है हम कई जन्मों में नही उतार सकेगें क्योंकि आपने ही हमें जीवन जीना सिखाया। राजा होकर भी हमारे जीवन में किसी भी प्रकार का दुर्व्यसन नहीं है यह कोई छोटी बात है। जैसे आज नेताओं में पुराने राज घरानों में चल रहा है तो वहां भी चलता लेकिन यह प्रभाव मात्र महर्षि के जीवन और उपदेशों का है जो कई पीढ़ी तक प्रभावित रहा उनकी इच्छा भविष्य के लिए भी थी पर पता नहीं अब उनके सुपुत्र कितना पालन कर पा रहे हैं। आज महर्षि जी के अन्नय भक्त थे उनकि विचारों का प्रचार करते रहते थे इसमे बार–बार प्रधान पद को सुशोभित किया आर्य समाज का सम्मेलन जहाँ भी हुआ प्रसन्नता से जाकर शोभा बढ़ाते थे। एक आर्य समाज के सम्मेलन में दरियां बिछाई हुई थी और मार्ग की आगे ही यज्ञकुण्ड बना हुआ था उसे भी वस्रें से ढक दिया था लोगों की भीड़ नारे लगाते चल रही थी नीचे किसी ने ध्यान नही दिया पांव जैसे ही यज्ञकुण्ड में गिरे भारी शरीर का वजन सन्तुलित नहीं हो पया और टांग टूट गई फिर कई महीने तक अस्पताल में रहे तभी से उनका बाहर जाना बन्द हो गया। जनता पर उनके स्वभाव का प्रभाव पड़ता था कि जब राजा साहब आर्य समाज में हैं तो हमें भी सदस्य बनना चाहिए। ऐसे धुन के धनी और समर्पित निष्ठ से महर्षि के विचारां को जीवन में उतारकर अन्यों को भी प्रेरणा देने वाले राजार्षि राजा रणञ्जय सिंह ने जो शिक्षा क्षेत्र में विद्यालय स्थापना संचालन कार्य किया है वह स्वर्णिम इतिहास का सुन्दरतम स्वर्णिम अध्याय है। भावी पीढ़ी इस दिशा में चिन्तन करे जीवन सुधारने के लिए वेदों के मार्ग का अनुकरण करें ऐसी सद्बुद्धि परमात्मा हमें सभी आर्यों को प्रदान करें।

"वेद ईश्वरी ज्ञान है, इसके प्रमाण"

– खुशहाल चन्द्र आर्य

वेद ईश्वरीय–ज्ञान है, इसके निम्नलिखित प्रमाण हैं–

1. सृष्टि और वेदों में एकता : सृष्टि में हम जो कुछ देखते हे, वैसा ही वेदों में लिखा हुआ है। जब सृष्टि ईश्वर ने बनाई है तो इससे सिद्ध होता है कि वेद भी ईश्वर के ही बनाए हुए हैं। यदि वेद ईश्वर के बनाए हुए नहीं होते तो सृष्टि भी वेदों के अनुसार नहीं होती। जब सृष्टि में और वेदों में एक रूपता है तो इससे सिद्ध होता है कि दोनों चीजें किसी एक ही की बनाई हुई हैं। अब प्रश्न उठता है कि सृष्टि भी ईश्वर ने नहीं बनाई। ईश्वर ने बनाई इसका क्या प्रमाण है? इसका उत्तर यह है कि जीव की क्षमता ही नहीं कि वह सृष्टि बना सके। सृष्टि बनाने के लिए सर्वव्यापक, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान को होना जरूरी है। जीव अल्पज्ञ है, एक स्थानीय है और सीमित आयु वाला है इसलिए जीव सृष्टि नहीं रच सकता। यह तीनों गुण ईश्वर में है इसलिए सृष्टि ईश्वर ने रची है। सृष्टि जड़ है यानि अचेतन है तब भी सृष्टि किसी नियम के अनुसार चलती है। जैसे सूर्य समय पर उगता है और समय पर छिपता है। पृथ्वी सूर्य के चारों तरफ घूमती है और स्वयं भी अपनी परिधि में घूमती है और चन्द्रमा पृथ्वी के चारों तरफ परिक्रमा करता है। जड़ वस्तु में स्वयं में बनने की शक्ति नहीं होती। उसको बनाने के लिए या चलाने के लिए किसी चेतन बुद्धिमान की आवश्यकता होती है। नियम पूर्वक चलने वाली सृष्टि का कोई नियमाक (नियम से चलाने वाला) अवश्य होना चाहिए। इससे सिद्ध होता है कि सृष्टि का नियामक ईश्वर है।

2. वेदों में जीव के लिए पूर्ण ज्ञान है : वेदों में मनुष्य को जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त उसको क्या काम करने चाहिए और क्या काम नहीं करने चाहिए सब लिखा है। जीव का मुख्य लक्ष्य मोक्ष पाना है जो मनुष्य योनि में ही सम्भव है। मनुष्य के लिए चार पुरुषार्थ निर्धारित किये गये हैं। वे हैं– धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। धर्म, अर्थ और काम को धार्मिक भावना के साथ कर्त्तव्य भाव से करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है। मनुष्य को कैसे जीना चाहिए जिससे वह मोक्ष–प्राप्त कर यह सब ज्ञान वेदों में हैं, यानि वेद पूर्ण ज्ञान के भण्डार हैं। पूर्ण ज्ञान वहीं दे सकता है जो स्वयं में पूर्ण होगा। जीव अल्पज्ञ है वह वेद–ज्ञान नहीं दे सकता। ईश्वर पूर्ण है उसी ने वेद–ज्ञान दिया है। पूर्ण ईश्वर का दिया हुआ ज्ञान भी पूर्ण होगा। इसलिए वेद ज्ञान भी अपने आप में पूर्ण है जो ईश्वर से आदि सृष्टि में मनुष्य उत्पत्ति के साथ ही चार ऋषियों द्वारा जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य व अंगीरा थे उनके मुखों से चार वेद ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अर्थववेद क्रमशः उच्चारित किए गये। पूर्णता ज्ञान भी पूर्ण होता है इसलिए वेद–ज्ञान भी पूर्ण है।

3. वेदों में किसी के प्रति कोई भेद–भाव नहीं : ईश्वर ने वेद–ज्ञान केवल मानव–मात्र ही नहीं बिल्क प्राणी–मात्र के कल्याण के लिए दिया है। ईश्वर सब जीवों को उनके कर्मानुसार योनियों में भेजता है इसलिए ईश्वर सब का पिता हुआ और सब जीव उसके पुत्रवत हुए। कभी पिता अपने पुत्रों में कोई भेद–भाव नहीं रखता। सब के कल्याण की सोचता है इसलिए ईश्वर ही सभी जीवों के कल्याण की सोचता है। वेदों में सभी जीवों के कल्याण व उपकार की बातें है इसलिए सिद्ध होता है कि वेद का ज्ञान–ईश्वरी दिया हुआ है यदि किसी मनुष्य का दिया हुआ हो तो उसमें भेद–भाव होता कारण मनुष्य अल्पज्ञ है वह अपनो का कल्याण व उपकार करना चाहता है सबका नहीं।

४. वेदों के सभी मन्त्र बहुवचन में हैं : वेद पूरे मानव–मात्र के है इसीलिए उनके सभी मन्त्र बहुवचन में हैं। यदि किसी एक देश या समुदाय का होता तो एक वचन में होता। वेदों के सभी मन्त्र ईश्वर को सम्बोधित करके लिखे गये हैं। इसलिए वेद, ईश्वर के बनाए हुए हैं। उदाहरण के लिए दो मन्त्र, अर्थ सहित यहाँ लिखे जाते हैं–

ओ३म विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद् भद्रं तन्न आ सुव।। यजु० अ० ३० ।मंत्र ३।।

अर्थ– हे सकल जगत के उत्पत्ति कर्ता समग्र ऐश्वर्य मुक्त शुद्ध स्वरूप, सब सुखों के दाता परमेश्वर! आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुखों को दूर कीजिए और जो कल्याण कारक गुण, धर्म स्वभाव और पदार्थ है, वह सब हमको प्राप्त कीजिए।

दूसरा मंत्र–

ओ३म स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यत्र देवा अमृतमान शानास्तुतीये धामन्यध्यैश्यन्त।।
यजु० ३२ ।मंत्र २०।।

अर्थ– हे मनुष्यों! वह परमात्मा अपने लोगों का भ्राता के समान सुखदायक, सकल जगत का उत्पादक, वह सब कार्यों को पूर्ण करते हुए, सम्पूर्ण लोक–मात्र और नाम, स्थान, जन्मों को जानता है और जिस संसारिक सुख–दुःख से रहित नित्यानन्द मुक्त, मोक्ष स्वरूप धारण करते हुए परमात्मा में मोक्ष को प्राप्त हो के विद्वान लोग स्वेच्छा पूर्वक विचरते हैं, वही परमात्मा अपना गुरू, आचार्य राजा और न्यायाधीश है। अपने लोग मिल के सदा उसकी भक्ति किया करें।

इन दो मन्त्रों से यह सिद्ध हो गया है कि वेदों के सभी मन्त्र बहुवचन में है और ईश्वर को ही सम्बोधित किया गया है। इसलिए वेद ईश्वर की ही रचना है।

अग्निहोत्र चर्चा

– आचार्य विश्वव्रत शास्त्री
सत्यनारायण वेद प्रचार ट्रस्ट लखनऊ

उपनिषद् में दो शरीरों का वर्णन है एक व्यष्टि शरीर अर्थात् हम सबके व्यक्तिगत शरीर और दूसरा समष्टि शरीर पूरे ब्रह्माण्ड को कहा गया है यज्ञ के द्वारा दोनों शरीरों को लाभ होता है व्यक्तिगत लाभ हमारे अपने–अपने शरीरों को और साथ ही समष्टि शरीर रूप प्रकृति को भी यज्ञ का पूर्ण लाभ मिलता है।

जब तक यज्ञ की व्यवस्था थी तब तक मनुष्य समुदाय सुखी था। लेकिन जब यज्ञ संस्था को विकृति प्राप्त हुई और उसमें नाना प्रकार की बुराइयाँ आ गईं। यह उपकारक संस्था लुप्त होती चली गई। महात्मा बुद्ध और महात्मा महावीर ने इस विकृति यज्ञ व्यवस्था के विरूद्ध विद्रोह किया। यदि स्वामी दयानन्द की तरह यह दोनों महापुरूष यज्ञ के असली मकसद को ढूँढ निकालते तो आज यह संस्था लुप्त न होती बल्कि उसका वैज्ञानिक स्वरूप और निखार दुनिया के सामने आता।

आइए अब हम मूल विषय पर कुछ चर्चा करते हैं। यह बात विज्ञान के द्वारा सर्वथा सिद्ध है कि पदार्थ कभी नष्ट नहीं होता। पदार्थ का रूप परिवर्तित हो जाता है सृष्टि में हर पदार्थ विभिन्न अवस्थाओं में विद्यमान रहता है। जमीन पर पानी द्रव्य रूप में रहता है। जमीन पर पानी द्रव्य रूप में रहता है वही ठंडे प्रदेशों में बर्फ के रूप में रहता है एक ही पदार्थ के तीन रूप हुए। इसी तरह अग्नि में जो हम स्थूल पदार्थ डालते हैं अग्नि अपने स्वभावानुसार उसे सूक्ष्म पदार्थ में बदल देती है।

साधारण लोग इसे नष्ट हो जाना समझते हैं। यज्ञ में अनेक प्रकार की औषधियां डाली जाती हैं वे सूक्ष्म होकर तीन स्थानों पर अपना प्रभाव दिखलाती हैं अर्थात् पृथिवी, अन्तरिक्ष और द्युलोक में। पृथिवी पर यज्ञ में डाल गईं घृतयुक्त औषधियां मनुष्य प्राणी तथा वनस्पतियों पर प्रभाव डालती हैं। वेद मंत्र है

हविष्मतीरिमा आपो .....

अर्थात्– हे विद्वान् लोगों आप वे यज्ञ करें जिससे पृथिवी, अन्तरिक्ष एवं द्युलोक, जल, औषधियां आदि सब प्रकार से यज्ञ की हवि से युक्त होकर नाना प्रकार से सुखकारक एवं उपकारक हों।

वसो : पवित्रमसि द्यौरसि .....

यजुर्वेद के इस मंत्र में उस पवित्रमय और सुखदायक यज्ञ को पृथिवी तथा देश देशान्तरों में फैलाकर प्राणी जगत् को आरोग्य और सुख का देने वाला कहा है। ऐसे यज्ञ का न तो स्वयं त्याग करना चाहिए और न दूसरों को त्याग करवाने देना चाहिए, अर्थात् पर्यावरण की पवित्रता के लिए जहाँ–तहाँ यज्ञ का प्रचार–प्रसार होते ही रहना चाहिए इस वेद मंत्र में स्पष्ट रूप से यज्ञ को प्राणी, जगत् और पर्यावरण को सुखकारक बनाने वाला साधन कहा गया है।

यज्ञ में दी गई हवि दो स्थानों पर विशेष कार्य करती है एक भूमि पर बसे हुए लोगों पर और दूसरे अन्तरिक्ष में। सबसे पहले हवन में डाली गई सामग्री मनुष्य और प्राणियों के श्वास–प्रश्वास के द्वारा फेफड़ों में पहुंचती है वहां रक्त में मिलकर हृदय तथा अन्य भीतरी अंगों में जाकर उन्हें सक्रिय करती है। मरणासन्न व्यक्ति को जिस तरह श्वास के द्वारा ऑक्सीन देकर बचाया जाता है। उस समय टैबलेट, इंजेक्शन तथा अन्य मार्ग से दी हुई दवाई इतनी जल्दी असर नहीं करती जितनी कि श्वास के द्वारा दी गई दवाई कार्य करती है यही सिद्धांत यज्ञ में दी गई वनस्पत्यौषधियों की आहूतियों पर लागू होता है।

यज्ञ में डाला गया घृत सूक्ष्म होकर वायुमण्डल में मिश्रित होकर प्राणियों को आरोग्य प्रदान करता है।

फ्रांस के विज्ञान वेत्ता प्रोफेसर ट्रिलवर्ट का कथन है कि जलती हुई शक्कर में वायु शुद्ध करने की इतनी शक्ति है कि इससे चेचक हैजा जैसी बीमारियां नष्ट हो सकती है फ्रांस के ही विद्वान डॉक्टर हैफ्फिन का मत है कि घी के जलने से कई रोगों के जन्तु घृत कणों के संपर्क से नष्ट हो जाते हैं। उसी तरह आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् डॉ० स्वामी सत्यप्रकाश ने यज्ञ पर अनुसंधान कर निष्कर्ष निकाला है कि सामग्री और घृत के परमाणुओं से फॉर्मेल्डिहाइड गैस उत्पन्न होती है। यह वायुमण्डल में फैलकर रोग उत्पादक कीटाणुओं को नष्ट कर देती है। इसका प्रभाव जलवाष्प के कणों पर भी दिखाई देता है।

यज्ञ में डाली हुई घी और सामग्री का हमारे फेफड़ों पर सबसे पहला असर होता है। जिस तरह दूषित वायु में हमारा दम घुटने लगता है और जी बेचैन होने लगता है। उसी तरह का परिणाम यज्ञ की औषधि युक्त वायु से नहीं होता बल्कि प्रसन्न्ता होती है इसी का अर्थ यह हुआ कि यज्ञ में डाली हुई औषधि युक्त सामग्री हमारे स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद है।

क्रोध पर विजय पाये

– प्रस्तुति प्रदीप शास्त्री

दुनिया में जहाँ–जहाँ अधिकार के बल पर शासन चलाने की नीयत हावी रही थी, उन जगहों में बगावतें और क्रांतियाँ इसी तरह फूट पड़ी थीं। आप ही बताइए, क्या आप उन लोगों को पसंद करते हैं जो आप पर हुकूमत चलाना चाहते हैं? या उन्हें जो मित्र की भाँति कंधे पर हाथ डालकर आपको अपने आगोश में लेते हैं?

हरेक जगह पर अलग–अलग ढंग से काम करना पड़ सकता है। लेकिन आपकी मूल प्रकृति जो स्नेह है, उससे चूके बिना स्नेह को बनाए *रखिए। तभी किसी को दर्द पहुंचाए बिना आप अपने लक्ष्य को पा सकते हैं।*

आपने सोचा था कि क्रोध भी एक शक्ति है। उसके द्वारा कई चीजों पर अधिकार कर सकते हैं। यही सोचकर आपने क्रोध को एक हथियार बना लिया था। लेकिन इस हथियार का दूसरों पर प्रयोग करते समय, वह उन पर जो असर डालता है, उससे ज्यादा असर आप पर ही तो डालता है, जब आप गुस्से में होते हैं आपकी अक्ल उल्टा–सीधा काम करने लगती है, है न? और उसका नतीजा हमेशा बुरा ही तो निकलता है। सामने गुलाब का फूल है, उसे देखते ही संभव है किसी को मतली आए। इसका दोष गुलाब का है या उस व्यक्ति का? आपके क्रोध का मूल कारण अगला व्यक्ति नहीं, बल्कि आप हैं, यदि आप इस तथ्य का अनुभव कर लें तो आपकी समझ में आ जाएगा कि क्रोध करना कितनी बड़ी मूर्खता है।

शेष पृष्ठ ५ पर

प्रेरक प्रसंग

कंजूस और यमदूत

एक कंजूस व्यक्ति ने जीवनभर कंजीसी करके पांच करोड़ रूपये एकत्रित कर लिए। इस धन की बदौलत वह एक साल तक बिना कोई काम किए चैन की बंसी बजाने के स्वप्न देखने लगा। लेकिन इसके पहले कि वह उस धन को निवेश करने का इरादा कर पाता, यमदूत ने उसके दरवाजों पर दस्तक दे दी।

उस व्यक्ति ने यमदूत से कुछ समय देने की प्रार्थना की, परन्तु यमदूत अड़ा रहा टस से मस नहीं हुआ। व्यक्ति ने याचना की 'मुझे तीन दिन की जिन्दगी दे दो, मैं तुम्हें अपना धन दे दूंगा।'' पर यमदूत ने उसकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया।

उस व्यक्ति ने फिर प्रार्थना की, मैं आपसे एक दिन की जिन्दगी की भीख मांगता हूँ। इसके बदले आप मेरी वर्षों की मेहन से जोड़ा गया पूरा धन ले लीजिए।'

यमदूत फिर भी अडिग रहा। तमाम अनुनय–विनय के बाद उस व्यक्ति को यमदूत से सिर्फ इतनी मोहलत मिली कि वह एक संदेश लिख सके। उस व्यक्ति ने अपने संदेश में लिखा –''जिस किसी को भी यह संदेश मिले, उससे मैं केवल इतना कहूंगा कि जीवन भर सिर्फ सम्पत्ति जोड़ने की फिराक में न रहो। जिंदगी का एक–एक पल पूरी तरह से जियो। मेरे पाँच करोड़ रूपए भी मेरे लिए एक घण्टे का समय नहीं खरीद सके।''

राह– '' पैसे कमाएं, पर जीवन का आनन्द भी उठाएं, क्योंकि मौका भविष्य में नहीं, वर्तमान में हैं।

सन्ध्या से ईशोपासना

–प्रातप कुमार 'साधक', लखनऊ

वैदिक संन्ध्या के लिए आसनस्थ होने के पश्चात् आंखें बन्द करके विचार करें कि हम मानव शरीर में क्यों आए हैं?

निश्चय ही, हमारा लक्ष्य ईश्वर की प्राप्ति है। इसके लिए हमें सांसारिक वस्तुओं और विचारों से हटकर आनन्द स्वरूप ईश्वर का ही चिन्तन करना है। (अब विचारों को समेटते हुए इन्द्रियों से सम्बन्ध हटा लें। आँखों से देखने की इच्छा न रहे। कानों में कोई ध्वनि आती है, तो ध्यान न दें। सर्दी, गर्मी का विचार न करें)।

अब गायत्री मंत्र हल्की आवाज़ में बोलें, पश्चात् हिन्दी भाषा में निम्न प्रार्थना करें–

हे सच्चिानन्द स्वरूप प्यारे ओ३म्! आप ही इस सृष्टि की रचना, पालन और प्रलय करने वाले हैं। आप समस्त लोकों के प्रकाशक और सूर्यादि प्रकाशित लोकों के निर्माण कर्त्ता और धारण कर्त्ता हैं। हे ईश्वर! आप में अनन्त ज्ञान, अनन्त बल, अनन्त क्रिया और अनन्त आनन्द है।

आप ही भूः–प्राण स्वरूप, प्राणों के भी प्राण हैं। आप हैं। और आप ही स्वः–व्यान रूप, सर्वव्यापक, सांसारिक और मोक्ष सुखों के प्रदाता हैं। आप ही सविता–सकल जगत् के उत्पत्तिकर्ता और समस्त प्राणियों के शरीरों के रचयिता हैं। आप वरेण्य हैं, सबसे श्रेष्ठ, सबसे महान और प्यारे हैं। हम आपका ही वरण करना चाहते हैं। आप गर्भस्वरूप, तेज स्वरूप हैं। जो आपके तेजोमय स्वरूप को ध्यान करता है, और धारण करता है, उसके समस्त पाप, ताप, संतापों, कष्ट और क्लेशों को आप भस्म कर देते हैं। प्रभो! आप ही देव, हैं। आप ज्ञान स्वरूप, मार्ग दर्शक, गुरूओं के गुरू आदि गुरू हैं, स्वयं प्रकाश स्वरूप हैं। हम आपके उसी ज्योति स्वरूप का ध्यान करना चाहते हैं। ऐसी कृपा करो भगवन्! कि उपासना काल में हमारा मन निरन्तर आपके ही ध्यान में लगा रहे, और हमारी बुद्धि आपके ही गुण, कर्म, स्वभाव और स्वरूप का चिन्तन–मनन करती रहे। हे पिता! इस प्रातःकाल/सायंकाल की सुन्दर शान्त बेला में हम आपसे यही प्रार्थना करते हैं। भगवन्! हमारी प्रार्थना को स्वीकार करो और हमारी साधना को सफल करो। हम आपको श्रद्वापूर्वक बारम्बार नमन् करते हैं।

इसके बाद २ बार का लम्बा उद्बोधन करें और दो बार भ्रामरी प्राणायाम करे। तत्पश्चात् आचमन मंत्र के साथ संन्ध्या के मंत्रों का मानसिक, पाठ करें, और उनका भावार्थ भी विचारते गाएँ।

प्राणायाम के बाद प्रत्याहार की स्थिति बनाएँ। अर्घषण मंत्रों के द्वारा ईश्वर की महानता का अनुभव करें। संन्ध्या परिक्रमा मंत्रों द्वारा ईश्वर की सर्वव्यापकता और भावी कृपाओं का ध्यान करें। अब हृदय पुण्डरीक, में आनन्द स्वरूप परमेश्वर की धारणा करें। मंत्रों के भावार्थ अपनी मातृभाषा में मानसिक रूप से कहते हुए ईश्वर के लिए मध्य पुरूष का प्रयोग करें, प्रथम पुरूष का नहीं। जैसे एक शिष्य या याचक अपने गुरू या स्वामी के सम्मुख प्रार्थना करता है, ऐसे ही ईश्वर को अपने सम्मुख अनुभव करो। ऐसा करते हुए आनन्द स्वरूप का आनन्द साधक/साधिका को प्राप्त होने लगेगा। ऐसी स्थिति में ही उपासना मंत्रों का मानसिक पाठ करते हुए देवों के देव उत्तोतम उन्नति में ध्यान मन्द हो जाओ। अधिक से अधिक समय तक, ईश्वर के आनन्द स्वरूप में ही अपने चित्त को लगाए रखता है। इससे चित्र वृत्तियां शान्त रहेंगी और ध्यान परिपक्व होता जाएगा।

जब शरीर छुकने लगे, तो समर्पण तथा नमस्कार मंत्र के द्वारा ईश्वर को कोटिशः धन्यवाद दो। हाथों की हथेलियों को परस्पर मलकर आंखों पर रखें, धीरे–धीरे आंखें खोलें और ओंकार की ध्वनि ३ बार करें। बैठे–बैठे ही पैरों को धीरे–धीरे सीधा करके हिलाएं, कुछ आसन करके शरीर अब ठीक हो जाए, तब डटें।

उपरोक्त अनुसार निश्चित समय और स्थान पर सन्ध्या करने से मन भी लगेगा और आनन्द भी आएगा।

पृष्ठ ४ का शेष

मेरे इस कथन को सुनकर कोई सवाल कर सकता है, 'यदि क्रोध न करें तो गलती करने वाले कैसे सुधरेंगे? आपने देखा होगा घोड़े या गधे का मालिक या किसान बैलों को पहले ध्यान अपनी ओर खींचने के लिए एकाध चाबुक रसीद करता है, इसका मतलब ये नहीं वो उन पर क्रोध करता है, थोड़ा रास्ता दिखाना जरूरी हो सकता है दूसरों को रास्ते पर लाने के लिए यों एकाध बार जोर से ठोकना पड़ सकता है। लेकिन उसके लिए क्रोध आवश्यकता नहीं है न? हरेक जगह पर अलग–अलग ढंग से काम करना पड़ सकता है। लेकिन आपकी मूल प्रकृति जो स्नेह है, उससे चूके बिना स्नेह को बनाए रखिए। आपके अधीन काम करने वाले कर्मचारी यदि कार्यालय के नियमों के प्रतिकूल चलें तो ऐसे मौकों पर आप चुप नहीं रह सकते, उन पर कार्यवाही करनी पड़ेगी।

शुरू से ही यदि आप उन पर केवल प्रेम दिखाते आए तो आपके ऊपर उन्हें पूरा भरोसा आ गया होता। वे समझ जाते कि अनिवार्य कारणों से ही आपको ऐसा एक निर्णय लेना पड़ा है। आपके प्रति उनके आदर भाव में कमी नहीं होगी, मित्रता बरकरार रहती।

लेकिन अगर आप अपना अधिकार साबित करने के वक्रतापूर्ण संतोष के लिए कार्यवाही करेंगे तो उनके मन में आपके प्रति विरोध का भाव पैदा होगा। फिर वे उस मौके के इंताजार में बैठे रहेंगे जब उनका हाथ ऊँचा होगा।

अहंकार

–जयदेव आर्य, यमुनानगर, हरियाणा

बात उस समय की है जब मैं बाल्य अवस्था में था! पिता जी आर्य समाज के मंत्री थे! आर्य समाज के बहुत बड़े–बड़े आयोजन हमारे गांव में हुआ करते थे! इसी प्रकार का एक आयोजन हो रहा था! मैं भी वहीं पर था! स्टेज पर एक विद्वान जो श्वेत धोती पहने व उपर श्वेत चादर ओढ़े थे और उनको महात्मा जी कह कर सम्बोधित किया जाता था, उपस्थिति जन समूह को सम्बोधित कर रहे थे! अधिकांश लोग अनपढ़ या कम पढ़े लिखे होते थे! महात्मा जी बोल रहे थे! सब शांति से बात सुन रहे थे! अचानक महात्मा जी की किसी बात पर जो मुझे याद नहीं क्या थी, किसी व्यक्ति ने कुछ शंका करते हुए प्रश्न किया! तब महात्मा जी ने उसके प्रश्न का जवाब देने की बजाय कहा, "इस दुष्ट को बाहर निकालो! यह मूर्ख है, मूर्खों का यहां क्या काम है और मूर्खों से मैं बात नहीं किया करता!" तभी वहीं से दो तीन लोग खड़े हुए व उसको धक्के व थप्पड़ मार दूर भगा दिया! वह सर्दी की रात्रि का समय था! कार्यक्रम समाप्ति के बाद हम घर आ गए! महात्मा जी ने वेद प्रचार में क्या कहा, वह तो मुझे याद ही नहीं था पर उक्त व्यक्ति की पिटाई मेरे मानस पटल पर छप गई!

महात्मा जी का रात्रि ठहराव भी सौभाग्य से हमारे ही घर पर था! जब वो हमारी बैठक में सोने की तैयारी कर रहे थे, मैंने उनसे सवाल कर दिया कि, 'आपने उस व्यक्ति को क्यों पिटवा दिया?' उनका उत्तर था कि वो अज्ञानी है! मूर्ख है!' मैंने फिर प्रश्न कर दिया, वो अज्ञानी है, तभी तो वो आपसे प्रश्न पूछ रहा था, अगर उसको आप से अधिक ज्ञान होता तो वो आपसे नहीं, आप उससे पूछ रहे होते!' तब उनका उत्तर था, ओह, बेटा वास्तव में मैं ज्ञानी होकर भी अज्ञानी रह गया, और अहंकार ही मेरा अज्ञान है!'

अगले दिन उन्होंने पिता जी को बोलकर उक्त व्यक्ति को बुलाया, जिसकी रात को पिटाई हो गई थी, व उससे क्षमा मांगते हुए उसके प्रश्नों का समाधान किया।

वास्तव में जहां से हमारी विनम्रता शुरू होती है, वहां से हमारा ज्ञान शुरू होता है, और जब उस ज्ञान का अहंकार हो जाता है, वहीं से हम अज्ञान की ओर बढ़ने लगते हैं! विनम्रतापूर्वक अपने ज्ञान को हम जितना अधिक प्रसाद रूप में वितरित करेंगे, उतने ही ज्ञान रूपी प्रसाद हमें मिलेगा।

सन्ध्या से ईशोपासना

–प्रातप कुमार 'साधक', लखनऊ

वैदिक संन्ध्या के लिए आसनस्थ होने के पश्चात् आंखें बन्द करके विचार करें कि हम मानव शरीर में क्यों आए हैं?

निश्चय ही, हमारा लक्ष्य ईश्वर की प्राप्ति है। इसके लिए हमें सांसारिक वस्तुओं और विचारों से हटकर आनन्द स्वरूप ईश्वर का ही चिन्तन करना है। (अब विचारों को समेटते हुए इन्द्रियों से सम्बन्ध हटा लें। आँखों से देखने की इच्छा न रहे। कानों में कोई ध्वनि आती है, तो ध्यान न दें। सर्दी, गर्मी का विचार न करें)।

अब गायत्री मंत्र हल्की आवाज़ में बोलें, पश्चात् हिन्दी भाषा में निम्न प्रार्थना करें–

हे सच्चिानन्द स्वरूप प्यारे ओ३म्! आप ही इस सृष्टि की रचना, पालन और प्रलय करने वाले हैं। आप समस्त लोकों के प्रकाशक और सूर्यादि प्रकाशित लोकों के निर्माण कर्त्ता और धारण कर्त्ता हैं। हे ईश्वर! आप में अनन्त ज्ञान, अनन्त बल, अनन्त क्रिया और अनन्त आनन्द है।

आप ही भूः–प्राण स्वरूप, प्राणों के भी प्राण हैं। आप हैं। और आप ही स्वः–व्यान रूप, सर्वव्यापक, सांसारिक और मोक्ष सुखों के प्रदाता हैं। आप ही सविता–सकल जगत् के उत्पत्तिकर्ता और समस्त प्राणियों के शरीरों के रचयिता हैं। आप वरेण्य हैं, सबसे श्रेष्ठ, सबसे महान और प्यारे हैं। हम आपका ही वरण करना चाहते हैं। आप गर्भस्वरूप, तेज स्वरूप हैं। जो आपके तेजोमय स्वरूप को ध्यान करता है, और धारण करता है, उसके समस्त पाप, ताप, संतापों, कष्ट और क्लेशों को आप भस्म कर देते हैं। प्रभो! आप ही देव, हैं। आप ज्ञान स्वरूप, मार्ग दर्शक, गुरूओं के गुरू आदि गुरू हैं, स्वयं प्रकाश स्वरूप हैं। हम आपके उसी ज्योति स्वरूप का ध्यान करना चाहते हैं। ऐसी कृपा करो भगवन्! कि उपासना काल में हमारा मन निरन्तर आपके ही ध्यान में लगा रहे, और हमारी बुद्धि आपके ही गुण, कर्म, स्वभाव और स्वरूप का चिन्तन–मनन करती रहे। हे पिता! इस प्रातःकाल/सायंकाल की सुन्दर शान्त बेला में हम आपसे यही प्रार्थना करते हैं। भगवन्! हमारी प्रार्थना को स्वीकार करो और हमारी साधना को सफल करो। हम आपको श्रद्वापूर्वक बारम्बार नमन् करते हैं।

इसके बाद २ बार का लम्बा उद्बोधन करें और दो बार भ्रामरी प्राणायाम करे। तत्पश्चात् आचमन मंत्र के साथ संन्ध्या के मंत्रों का मानसिक, पाठ करें, और उनका भावार्थ भी विचारते गाएँ।

प्राणायाम के बाद प्रत्याहार की स्थिति बनाएँ। अर्घषण मंत्रों के द्वारा ईश्वर की महानता का अनुभव करें। संन्ध्या परिक्रमा मंत्रों द्वारा ईश्वर की सर्वव्यापकता और भावी कृपाओं का ध्यान करें। अब हृदय पुण्डरीक, में आनन्द स्वरूप परमेश्वर की धारणा करें। मंत्रों के भावार्थ अपनी मातृभाषा में मानसिक रूप से कहते हुए ईश्वर के लिए मध्य पुरूष का प्रयोग करें, प्रथम पुरूष का नहीं। जैसे एक शिष्य या याचक अपने गुरू या स्वामी के सम्मुख प्रार्थना करता है, ऐसे ही ईश्वर को अपने सम्मुख अनुभव करो। ऐसा करते हुए आनन्द स्वरूप का आनन्द साधक/साधिका को प्राप्त होने लगेगा। ऐसी स्थिति में ही उपासना मंत्रों का मानसिक पाठ करते हुए देवों के देव उत्तोतम उन्नति में ध्यान मन्द हो जाओ। अधिक से अधिक समय तक, ईश्वर के आनन्द स्वरूप में ही अपने चित्त को लगाए रखता है। इससे चित्र वृत्तियां शान्त रहेंगी और ध्यान परिपक्व होता जाएगा।

जब शरीर छुकने लगे, तो समर्पण तथा नमस्कार मंत्र के द्वारा ईश्वर को कोटिशः धन्यवाद दो। हाथों की हथेलियों को परस्पर मलकर आंखों पर रखें, धीरे–धीरे आंखें खोलें और ओंकार की ध्वनि ३ बार करें। बैठे–बैठे ही पैरों को धीरे–धीरे सीधा करके हिलाएं, कुछ आसन करके शरीर अब ठीक हो जाए, तब डटें।

उपरोक्त अनुसार निश्चित समय और स्थान पर सन्ध्या करने से मन भी लगेगा और आनन्द भी आएगा।

पृष्ठ ४ का शेष

मेरे इस कथन को सुनकर कोई सवाल कर सकता है, 'यदि क्रोध न करें तो गलती करने वाले कैसे सुधरेंगे? आपने देखा होगा घोड़े या गधे का मालिक या किसान बैलों को पहले ध्यान अपनी ओर खींचने के लिए एकाध चाबुक रसीद करता है, इसका मतलब ये नहीं वो उन पर क्रोध करता है, थोड़ा रास्ता दिखाना जरूरी हो सकता है दूसरों को रास्ते पर लाने के लिए यों एकाध बार जोर से ठोकना पड़ सकता है। लेकिन उसके लिए क्रोध आवश्यकता नहीं है न? हरेक जगह पर अलग–अलग ढंग से काम करना पड़ सकता है। लेकिन आपकी मूल प्रकृति जो स्नेह है, उससे चूके बिना स्नेह को बनाए रखिए। आपके अधीन काम करने वाले कर्मचारी यदि कार्यालय के नियमों के प्रतिकूल चलें तो ऐसे मौकों पर आप चुप नहीं रह सकते, उन पर कार्यवाही करनी पड़ेगी।

शुरू से ही यदि आप उन पर केवल प्रेम दिखाते आए तो आपके ऊपर उन्हें पूरा भरोसा आ गया होता। वे समझ जाते कि अनिवार्य कारणों से ही आपको ऐसा एक निर्णय लेना पड़ा है। आपके प्रति उनके आदर भाव में कमी नहीं होगी, मित्रता बरकरार रहती।

लेकिन अगर आप अपना अधिकार साबित करने के वक्रतापूर्ण संतोष के लिए कार्यवाही करेंगे तो उनके मन में आपके प्रति विरोध का भाव पैदा होगा। फिर वे उस मौके के इंताजार में बैठे रहेंगे जब उनका हाथ ऊँचा होगा।

अहंकार

–जयदेव आर्य, यमुनानगर, हरियाणा

बात उस समय की है जब मैं बाल्य अवस्था में था! पिता जी आर्य समाज के मंत्री थे! आर्य समाज के बहुत बड़े–बड़े आयोजन हमारे गांव में हुआ करते थे! इसी प्रकार का एक आयोजन हो रहा था! मैं भी वहीं पर था! स्टेज पर एक विद्वान जो श्वेत धोती पहने व उपर श्वेत चादर ओढ़े थे और उनको महात्मा जी कह कर सम्बोधित किया जाता था, उपस्थिति जन समूह को सम्बोधित कर रहे थे! अधिकांश लोग अनपढ़ या कम पढ़े लिखे होते थे! महात्मा जी बोल रहे थे! सब शांति से बात सुन रहे थे! अचानक महात्मा जी की किसी बात पर जो मुझे याद नहीं क्या थी, किसी व्यक्ति ने कुछ शंका करते हुए प्रश्न किया! तब महात्मा जी ने उसके प्रश्न का जवाब देने की बजाय कहा, "इस दुष्ट को बाहर निकालो! यह मूर्ख है, मूर्खों का यहां क्या काम है और मूर्खों से मैं बात नहीं किया करता!" तभी वहीं से दो तीन लोग खड़े हुए व उसको धक्के व थप्पड़ मार दूर भगा दिया! वह सर्दी की रात्रि का समय था! कार्यक्रम समाप्ति के बाद हम घर आ गए! महात्मा जी ने वेद प्रचार में क्या कहा, वह तो मुझे याद ही नहीं था पर उक्त व्यक्ति की पिटाई मेरे मानस पटल पर छप गई!

महात्मा जी का रात्रि ठहराव भी सौभाग्य से हमारे ही घर पर था! जब वो हमारी बैठक में सोने की तैयारी कर रहे थे, मैंने उनसे सवाल कर दिया कि, 'आपने उस व्यक्ति को क्यों पिटवा दिया?' उनका उत्तर था कि वो अज्ञानी है! मूर्ख है!' मैंने फिर प्रश्न कर दिया, वो अज्ञानी है, तभी तो वो आपसे प्रश्न पूछ रहा था, अगर उसको आप से अधिक ज्ञान होता तो वो आपसे नहीं, आप उससे पूछ रहे होते!' तब उनका उत्तर था, ओह, बेटा वास्तव में मैं ज्ञानी होकर भी अज्ञानी रह गया, और अहंकार ही मेरा अज्ञान है!'

अगले दिन उन्होंने पिता जी को बोलकर उक्त व्यक्ति को बुलाया, जिसकी रात को पिटाई हो गई थी, व उससे क्षमा मांगते हुए उसके प्रश्नों का समाधान किया।

वास्तव में जहां से हमारी विनम्रता शुरू होती है, वहां से हमारा ज्ञान शुरू होता है, और जब उस ज्ञान का अहंकार हो जाता है, वहीं से हम अज्ञान की ओर बढ़ने लगते हैं! विनम्रतापूर्वक अपने ज्ञान को हम जितना अधिक प्रसाद रूप में वितरित करेंगे, उतने ही ज्ञान रूपी प्रसाद हमें मिलेगा।

शोक श्रद्धांजली सभा

आर्य समाज नजीबाबाद बिजनौर द्वारा संचालित आर्य कन्या इण्टर कालेज के प्रबन्धक श्री पवन पहलवान् के पूज्य पिता चौ० न्यादरसिंह जी का १८ सितम्बर को निधन हो गया वे ८४ वर्ष के थे उनका शान्ति यज्ञ २१ सि० को श्री हरप्रसाद शास्त्री जी एवं श्री विक्रम सिंह आर्य ने सम्पन्न कराया ३ बजे से शोक सभा का आयोजन हुआ जिसकी अध्यक्षता सभा प्रधान श्री डा० धीरज सिंह ने की तथा सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने शोक संवेदना व्यक्त की जिला सभा प्रधान विजय आर्य, मंत्री रमेश आर्य प्रदेश उपमंत्री रूद्र पाल आर्य, दिलावर सिंह, मनजीत सिंह महावीर सिंह जिंघाला सहित सैकड़ों आर्य उपस्थित रहे। अपने पीछे २ बेटी एवं २ बेटे अशोक आर्य एवं पवन आर्य को छोड़कर गए हैं। आर्य मित्र परिवार की ओर से शोक संवेदना व्यक्त की जाती है। प्रस्तुति– विकास कुमार आर्य, धेवता बिजनौर।

आर्य समाज जनकपुरी नई दिल्ली

वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

२७ अगस्त से ३ सितम्बर २०१८ तक बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर सामवेद परायण यज्ञ का भी आयोजन हुआ सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती गुरूकुल पूठ ने वेद कथा द्वारा आर्यों को सम्बोधित करे हुए वेद मार्ग पर चलते हुए परिवार निर्माण के साथ समाज निर्माण से राष्ट्र निर्माण का मार्ग प्रशस्त होता है।

अतः मानव निर्माण आर्यकरण संस्कार विधि से ही सम्भव है अन्तिम दिन श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व पर योगेश्वर कृष्ण का दिग्दर्शन कराया प्रतिदिन उपस्थिति अच्छी रही समापन पर डा० महेश विद्यालंकर जी ठा. विक्रम सिंह समाज सेवी आ० चन्द्रशेखर शास्त्री पश्चिमी दिल्ली सभा के अधिकारी भी पधारे समाज के प्रधान शिवकुमार मदान, मंत्री रमेश चन्द्र आर्य कोषाध्यक्ष सैनी जी का विशेष प्रयास रहा आ. प्रणवदेव शास्त्री एवं सन्दीप आर्य ने संजीत द्वारा सभी को प्रभावित किया आर्यवीर दल की वीरांगनाओं एवं आर्यवीरों का भी प्रदर्शन एवं भजन हुए इसमें उमामोगा जी का विशेष योगदान है ऋषि भोज के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। आर्य मित्र परिवार की ओर से शुभकामनाएं।

सिनसिनाटी नगर (अमेरिका) में हुई नये आर्य समाज की स्थापना

भारत से अंतराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन अटलांआ में आये हुए वैदिक विद्वान आचार्य श्री आनन्द पुरूषार्थी का हमारे नगर सिनसिनाटी में एक निजी यज्ञ करवाने के लिए आगमन हुआ। पुरूषार्थी जी ने वेदमंत्रों की व्याख्या करते हुए हम सभी को स्वाध्याय, यज्ञ उपासना आदि का संकल्प दिलवाया और अंत में आर्यसमाज का गठन कर दिया। हम सभी नव नियुक्त अधिकारियों को आर्य अधिकारियों को आर्य समाज व वैदिक धर्म की मान्यताओं के अनुकूल चलने की शपथ दिलवाई। हिन्दी व अंग्रेजी का साहित्य वितरित किया। अमेरिका आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री विश्रुत आर्य जी ने सभी को मोबाइल पर बधाई दी और इसके कार्य कलापों को भविष्य में चलाते रहने के लिए हर प्रकार के सहयोग का आश्वासन दिया। इसी प्रकार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री प्रकाश आर्य जी, दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी, दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने भी मोबाइल पर हम सभी को शुभकामनाएं प्रदान की। दर्शनीय स्थलों में एयर फोर्स म्यूजियम, किंग्स आईलैंड आदि भी यहां प्रमुख रूप से है। यह नगर शिकागो से ४६३ और अटलांटा से ७२४ किलोमीटर की दूरी पर है। भारत से ही १०–१५–२० वर्षो पूर्व आये हुए हम लोग विभिन्न धार्मिक सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। हम लोगों को आर्य समाज के सिद्धांतों का कोई विशेष ज्ञान नहीं है पर आचार्य जी के यज्ञ के बाद व्याख्यान व चर्चा से ऐसा लगता है कि ईश्वर की कोई विशेष कृपा हमारे ऊपर हुई है जो हमें आर्य समाज जैसी सर्वोत्तम संस्था से जुड़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। आर्य समाज के वरिष्ठ महानुभाव हम लोगों का यथा सम्भव मार्गदर्शन करेंगे तो निश्चय ही यह आर्य समाज भी अमेरिका के सक्रिय आर्यसमाजों के साथ खड़ा हो सकेगा।

– रवि त्रिवेदी, मंत्री आर्य समाज, सिनसिनाटी, *संयुक्त राज्य अमेरिका।*

आर्य समाज पिलखुवा हापुड़

१८ सितम्बर से २४ सितम्बर तक आर्य समाज पिलखुआ में वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन हुआ जिसमें सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती वैदिक विद्वान, श्री वीरेन्द्र शास्त्री, श्री पं० नरेश दत्त, आर्य प्रचारक के भजनों का लाभ आर्य जनता के उठाया अशोक, आर्य सुभाष आर्य, प्रेमचन्द्र आर्य, रवीन्द्र आर्य, राजपाल आर्य का सेवा सहयोग में विजय आर्य का योगदान रहा गौरव शास्त्री ने यज्ञ कराया।

आर्य जगत् के यशस्वी विद्वान डा. भवानी लाल जी भारतीय नहीं रहे

पूरे आर्य जगत् में शोक की लहर व्याप्त हो गई नव जागरण के पुरोधा महर्षि दयानन्द सरस्वती जीवन चरित्र लेखक अन्य आर्य साहित्य के यशस्वी विद्वान लेखक, डा० भवानी लाल भारतीय जी स्मृतिशेष हो गए हैं, उनके विषय में यह दुःखद समाचार प्रत्येक आर्य को उद्वेलित कर रहा है। उनके निधन की सूचना से आर्य जगत शोक मग्न हो गया आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय में शोक सभा का आयोजन किया गया। डॉ० धीरज सिंह, अरविन्द आर्य ने तथा सभा कर्मचारियों ने मिलकर शोकसंवेदना व्यक्त की सभा प्रधान जी ने बताया वे आर्य विद्वान आर्य जगत की शान थे उनके जाने से अपूरणीय क्षति हुई है परिवार में प्रधु धैर्य प्रदान करें।

गुरूकुल पूठ में शोक सभा

गुरूकुल पूठ की पवित्र यज्ञशाला में शान्ति यज्ञ के पश्चात् शोक सभा का आयोजन किया गया जिसमें आर्य जगत के यशस्वी विद्वान लेखक डा० भवानी लाल जी भारतीय के निधन पर सभा मन्त्री एवं संस्था संचालक स्वामी जी ने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि वे सरस्वती के वरदपुत्र थे उनकी वाणी में सरस्वती का वास था तथा लेखन में धारा प्रवाह था सुसंस्कृत हिन्दी में आपके लेख को पढ़ने की इच्छा बनी रहती थी आप उदार मन्त्र विद्वान थे सहज–सरल स्वभाव के धनी थे मेरे साथ कई उत्सवों में साथ–साथ रहे हैं अपने संस्मरण सुनाये। आचार्य राजीव जी, सुधीर आचार्य, दिनेश आर्य कुलदीप शास्त्री, हर्षदेव आर्य सत्यमुनि, जी आदि–आदि ने उनके विचार प्रस्तुत कर श्रद्धांजली प्रदान की।

–प्रदीप शास्त्री गुरूकुल पूठ

शोक संवेदना

आर्य समाज निजाम पुर हापुड़ के प्रधान भूपसिंह आर्य के बड़े भाई का अचानक हृदयाघात से देहान्त हो गया। मा० ज्ञानेन्द्र सिंह सभा उपमंत्री वीरेश मस्टी अ.स.विकास आर्य, बाबू सुरेन्द्र सिंह आर्य, जिला सभा हापुड़ तथा जिला सभा के ज्ञानेन्द्र चौधरी सहित काफी संख्या में शान्ति यज्ञ में भाग लिया आचार्य प्रेमपाल शास्त्री ने शान्ति यज्ञ सम्पन्न कराया सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने भी परिवार में जाकर शोक संवेदना व्यक्त की और धैर्य के लिए प्रार्थना की महीपाल आर्य ने कार्यक्रम का संयोजन किया आर्यमित्र परिवार एवं सभा प्रधान डॉ० धीरज सिंह जी की ओर से भी शोक संवेदना प्रेषित की गई।

शिक्षक दिवस मनाया गया

५ सितम्बर को गुरूकुलपूठ में शिक्षक दिवस का आयोजन किया गया सामवेद पारायण यज्ञ का भी पाठ किया गया सामवेद पारायण यज्ञ का भी पाठ किया गया तत्पश्चात् संचालक स्वामी जी ने सभी ब्र० एवं आचार्यों को गुरू आचार्य, शिक्षक, की परिभाष बताकर आचार्य का शिष्य के प्रति जो स्नेहिल आत्मीय भाव रहता है और उसके चरित्र का निर्माण होता है वहीं शिष्य की सम्पत्ति हो जाती है प्रचार्य राजीव जी ने अध्यक्षता की तथा आचार्य कुलपदीप जी ने संयोजन किया सभा में आ० दिनेश जी, सुधरी जी, हर्षदेव जी

कानपुर मण्डल की समस्त आर्य समाजों की ओर से केन्द्रीय आर्य सभा, कानपुर के तत्ववधान में आयोजित शहीद भगत सिंह की जयन्ती के अवसर पर

राष्ट्ररक्षा सम्मेलन

दिनांक 29 सितम्बर, दिन शनिवार सायं 3.00 बजे स्थान: आर्य समाज भवन, मेस्टन रोड, कानपुर

अध्यक्षता
श्रीमती कुमकुम स्वरूप
उप प्रधान आर्य सामज, मेस्टर रोड कानपुर

स्वागताध्यक्ष
श्रीयुत् डा. अभय कुमार श्रीवास्तव
प्रधान, केन्द्रीय आर्य सभा कानपुर

उद्घाटन कर्ता
मा० श्रीयुत् सुखराम सिंह यादव
सदस्य राज्य सभा भारत सरकार

मुख्य अतिथि
श्रीयुत् डा. धीरज सिंह
प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र., लखनऊ

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूरभाष : ०५२२-२२८६३२८
का० प्रधान- ०६४१२७४४३४१, मंत्री- ०६८३७४०२१६२, व्यवस्थापक- ६३२०६२२२०५
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com ई-मेल आर्य मित्र aryamitrasaptahik@gmail.com

सेवा में,
.....
.....

आर्य समाज के विभन्न कार्यक्रम की झलकियाँ

ठाकुर विक्रम सिंह जी के अमृत महोत्सव पर सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वनन्द जी

ग्राम में वेद प्रचार करते हुए गुरूकुल पूठ के ब्रह्मचारी एवं स्वामी अखिलानन्द जी एवं सभा मंत्री स्वामी जी

गुरूकुल रेवाड़ी में ब्रह्मचारियों को उपदेश करते हुए स्वामी जी

योग आश्रम खुटहां के वार्षिक उत्सव पर प्रतिनिधित्व करते हुए श्री बेचन सिंह आर्य जी व अन्य आर्यजन

डॉ0 रामरतन चतुर्वेदी जी महानिरीक्षक बनाये गये

आर्य मैरिज वैलीडेशन ऐक्ट–१९ ऑफ १९३७ के अन्तर्गत लखनऊ मण्डल, फैजाबाद मण्डल, देवीपाटन मण्डल, आजमगढ़ मण्डल, बस्ती मण्डल एवं गोरखपुर मण्डल में कार्यरत् आर्य समाजों द्वारा विवाह कराये जाने हेतु उत्तर प्रदेश की आर्य समाजों की स्वामिनी/प्रशासनिक संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, लखनऊ द्वारा जारी आवश्यक एवं औपचारिकता पूर्ति की जाँच, चल–अचल सम्पत्तियों एवं संचालित विद्यालयों एवं अन्य आवश्यक अभिलेखों की जाँच के सम्बन्ध में।

उत्तर प्रदेश की समस्त आर्य समाजों को अवगत एवं सूचित करना है, कि उत्तर प्रदेश में कार्यरत् आर्य समाजों की शिरोणि संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, नारायण स्वामी भवन, ५–मीराबाई मार्ग, लखनऊ सोसाइटी रजिस्ट्रेशन ऐक्ट–१८६० के अन्तर्गत एक पंजीकृत संस्था है तथा उत्तर प्रदेश में कार्यरत् आर्य समाजों की स्वामिनी/प्रशासनिक संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, लखनऊ है तथा इसी से प्रदेश की आर्य समाजें सम्बन्द्ध/पंजीकृत है।

उपयुक्त विषयक अपको लखनऊ मण्डल, फैजाबाद मण्डल, देवीपाटन मण्डल, आजमगढ़ मण्डल, बस्ती मण्डल, गोरखपुर मण्डल में कार्यरत आर्य समाजों द्वारा कराये जा रहे विवाह के सम्बन्ध में संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० लखनऊ द्वारा जारी आवश्यक दिशा–निर्देशों के अनुपालन विभिन्न आर्य समाजों द्वारा सुनिश्चित किये जाने सम्बन्धी निरीक्षण हेतु आपको आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, लखनऊ की ओर से निरीक्षक नियुक्त किया जाता है। आपको यह भी अधिकार *कि अपने सहयोग हेतु आवश्यकतानुसार प्रत्येक उपरोक्त जनपद एवं मण्डल में सहायक निरीक्षक स्वयं नियुक्त कर ले नियुक्त व्यक्तियों के नाम व* पता स्वामी संस्था में उपलब्ध करा दें। जाँच के बिन्दु हैं–

१. सदस्यता पंजिका।
२. साप्ताहिक सत्संग पंजिका।
३. कार्यवाही पंजिका (साधरण सभा एवं अन्तरंग सभा)
४. कैश–बुक, लेजर, चेक–बुक एवं पास–बुक।
५. विवाह पंजिका एवं संस्था द्वारा जारी विवाह प्रमाण पत्रों की जाँच।
६. चल–अचल सम्पत्तियों का निरीक्षण एवं जाँच।
७. आर्य समाजों द्वारा संचालित विद्यालयों की प्रशासन योजना के अन्तर्गत किये गये कार्यों की जाँच समय

आपको स्वामिनी सभा की ओर से यह भी अधिकार प्रदान किया जाता है कि किसी आर्य समाज द्वारा असहयोग किया जाये या जाँच में दोषी पाया जाये तो, सम्बन्धित आर्य समाज के विरूद्ध अधोहस्ताक्षरी द्वारा दिशा–निर्देश प्राप्त कर प्राथमिकी दर्ज करा सकते हैं अथवा आवश्यक दिशा–निर्देश जारी कर सकते है।

भवदीय
(डॉ0 धीरज सिंह)
प्रधान/का० प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र०

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक – मुद्रक –प्रकाशक –श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है– सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।